Department of Philosophy

Dr. Shuchi Tiwari (Assistant Prof.)
Ampgcc, Varanasi

George Wilhelm Friedrich Hegel

Born- 27th August 1770 (Germany)

Died- 14 November 1831

हेगल का जन्म जर्मनी में हुआ था। वह एक बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे।हेगल पाश्चात्य दर्शन केउत्कृष्ट कोटि के दार्शनिक है।उनकी प्रसिद्ध पुस्तक – 'phenomenology of spirit' और 'Logic'.

चूंकि हेगल के सभी पूर्ववर्ती दार्शनिक उनके किसी न किसी विचार का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसीलिए उन्हें "तुतलाने वाला हेगल कहा जाता है।

हेगल की प्रसिद्ध उक्ति है –"बोध ही सत्ता है सत्ता ही बोध है।"

हेगल का अटल विश्वास है कि तत्व विज्ञान रूप और विज्ञान गम्य है। हेगल ने अज्ञेय शब्द को नहीं स्वीकार किया है। उनके अनुसार जगत ज्ञान तत्व का ही बाह्य प्रकाश है। हमारे बुद्धि विकल्प ज्ञान के विकास के वास्तविक सोपान हैं और ज्ञान ही वस्तु जगत है। ज्ञान ही एकमात्र तत्व है और उसके विकल्प अभिव्यक्ति के वास्तविक सोपान हैं।

हेगल के अनुसार जीवात्मा और प्रकृति दोनों का मूल स्त्रोत परम तत्व है। यह परम तत्व सृष्टि में ही अंतर्यामी है। हेगल के अनुसार दर्शनशास्त्र का लक्ष्य परम तत्व के विकास की समुचित व्याख्या करना है । तर्कशास्त्र का कार्य भी यही है ।अत: हेगल तर्कशास्त्र और दर्शनशास्त्र दोनों को एक ही स्वीकार करते हैं । उनके अनुसार परम तत्व निरपेक्ष विज्ञान रूप या शुद्ध चैतन्य रूप है। दर्शन सब विज्ञानों का विज्ञान है , तर्कशास्त्र का विषय भी निरपेक्ष विज्ञान के विकास की विविध सोपानों की क्रमबद्ध व्याख्या ही है । अभी तक तर्कशास्त्र बुद्धि विकल्पों को अमूर्त विज्ञान मानकर केवल शुष्क अनुमान प्रक्रिया का विश्लेषण किया करता था । उसके तादात्म्य और विरोध आदि नियम केवल हमारे अमूर्त विचारों तक ही सीमित माने जाते थे। किंतु यह ठीक नहीं है। वस्तुत: विज्ञान ही एकमात्र सत्ता है । जिसे हम वस्तु जगत कहते हैं वह भी विज्ञान का ही परिणाम है । विज्ञान मूर्त और वास्तविक है। विज्ञानों के नियम वस्तु जगत पर ही लागू होते हैं।

हेगल के अनुसार एकमात्र तत्व निरपेक्ष या पूर्ण विज्ञान है। संपूर्ण विश्व इसी का परिणाम है। इंद्री संवेदन ,भावना ,इच्छा, संकल्प आदि सब विज्ञान के ही विविध रूप हैं । विज्ञाता विज्ञान स्वरूप ही है। विज्ञान की ही नित्य सत्ता है। हेगल की सिद्ध उक्ति है - "*जो चित् है वही सत् है और जो सत् है वही चित् है अथवा बोध ही सकता है और सत्ता ही बोध है।*"

विज्ञान केवल अमूर्त विचार नहीं है जिसकी सत्ता हमारे मस्तिष्क में है वह मूर्त वस्तु है ,केवल वही सत्य कहलाने का पात्र है । विज्ञान चित् शक्ति है जो स्वयं को इस विश्व के रूप में अभिव्यक्त करती है । विज्ञान शब्द का प्रचलित अर्थ है प्रत्यय जो हमारे मस्तिष्क का अमूर्त विचार या सामान्य है किंतु हेगल के अनुसार वस्तुतः विज्ञान मूर्त सामान्य है। हेगल का विज्ञान विशिष्टाद्वैतवाद है अर्थात अनेकता में एकता अनुस्यूत है। विशिष्टाद्वैत विज्ञान स्व- चेतन होता है । हेगल के शुद्ध विज्ञान या शुद्ध चैतन्य का अर्थ सदा स्वचेतन से है अमूर्त चैतन्य से नहीं ।विज्ञान मूर्त सामान्य है अमूर्त सामान्य नहीं। यह समष्टि रूप है । यह अवयवी है ।यह समष्टि व्यक्ति है। निरपेक्ष विज्ञान अपने अंगों में अनुस्यूत अभेद है ।प्रत्येक भेद या अवयव इस निरपेक्ष विज्ञान की एक धारणा है जो इसे अपने रूप में अभिव्यक्त करता है ।प्रत्येक धारणा इस समष्टि के व्यक्तित्व को न्यूनाधिक रूप में अभिव्यक्त करती है ।इसलिए इस निरपेक्ष विज्ञान के विकास के विभिन्न स्तरों में तारतम्य है। यह सब अवयव सोपानवत् क्रमबद्ध हैं और निरपेक्ष विज्ञान के प्रकाश से ही प्राणवान है। अवयवों और अवयवी में जीवित संबंधी है।

यह निरपेक्ष विज्ञान सर्वप्रथम अमूर्त विज्ञान के रूप में प्रतीत होता है ।अमूर्त विज्ञान शुद्ध विषयी के रूप में होता है ।विषयी को सदा विषय की अपेक्षा होती है अतः विज्ञान फिर विषय या जड़ जगत या प्रकृति के रूप में प्रतीत होता है। यह विज्ञान का बाह्य रूप है। यह शुद्ध भेद रूप है। यहां चैतन्य सुप्त होता है जो अपने विकास के लिए फिर उन्मुख होता है ।जड़ जगत से वनस्पति जगत में यह प्राण रूप हो जाता है और फिर पशु जगत में चेतन बन जाता है ।मानव आत्मा में जाकर यह स्व- चेतन बनता है ।स्व-चेतन में विषयी और विषय का वह विरोध रूप में नहीं रहता; उसका समन्वय हो जाता है। अमूर्त विज्ञान बाह्य विज्ञान से संवलित होकर अब मूर्त विज्ञान बन गया है जो अपने में और अपने लिए हैं। अब इसने अपने निरपेक्षत्व और पूर्णत्व को पा लिया है ।अमूर्त विज्ञान का विकास बाह्य विज्ञान द्वारा मूर्त विज्ञान के रूप में हो ,यही सृष्टि का प्रयोजन है।

हेगल का दर्शन विज्ञान का विकासवाद है ।जिस शक्ति के कारण विकास संभव होता है ,उसका नाम है "निषेध या विरोध " ।निषेध या विरोध प्राण स्पंदन है ।इसका अभाव मृत्यु है। हेगल के अनुसार अभी तक यह तर्कशास्त्र का एक गहरा अंधविश्वास और जनसाधारण में प्रचलित धारणा है कि विरोध तत्व के लिए उतना आवश्यक नहीं जितना तादात्म्य मे ।किंतु वस्तुतः विरोध के आगे तादात्म्य में एक निर्जीव वस्तु प्रतीत होता है ।विरोध समस्त गति और जीवन का स्रोत है ।किसी वस्तु की गति ,शक्ति या कार्य रूप में परिणति तभी संभव हो सकती है जब उसमें विरोध हो। हेगल के अनुसार ,"*निषेध अखिल विश्व का प्राण है।*"

धन्यवाद